केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा-संस्थान, सारनाथ, वाराणसी
ओएम विद्या संस्थानम्
Prof. Wangchuk Dorjee Negi
Vice Chancellor - In-charge

18 अप्रैल, 2023

14वें दलाई लामा जी के समर्थन में पत्र

परम पावन दलाई लामा जी की एक सार्वजनिक कार्यक्रम के दौरान एक छात्र के साथ निष्कपट एवं सहज स्नेह की अभिव्यक्ति की गलत व्याख्या के बारे में हाल की घटनाओं से हम बहुत दुःखी एवं चिंतित हैं। जबकि, परम पावन जी को उस आयोजन में उस बच्चे के प्रति तिब्बती संस्कृति के अनुरूप हास्य-विनोद के साथ अपार स्नेह एवं करुणा भाव को प्रदर्शित करते हुए देखा गया। उस समय की घटना को लेकर छात्र और उसकी मां सहित अन्य दर्शनार्थियों ने कोई नैतिक उल्लंघन या गलतफहमी जैसी कोई बात भी महसूस नहीं की।

लेकिन, वास्तविक घटना के लगभग दो महीने बाद, पूरी तरह से संपादित लगभग बीस सेकंड तक चलने वाली वीडियो क्लिप के माध्यम से सोशल मीडिया में दुष्प्रचार किया गया। दुष्प्रचार के नियत से यह सम्पादित विडियो क्लिप पूरे कार्यक्रम को प्रदर्शित न कर, केवल एक हिस्से को प्रदर्शितकर, तिब्बती संस्कृति से भिन्न, मुख्यधारा के मीडिया आउटलेट्स में फीड की गई थी, जो यह मानते थे कि उपर्युक्त सहज स्नेह की अभिव्यक्ति दुर्भावनापूर्ण प्रकृति की थी।

मैं अपने वैश्विक समुदाय से विनम्र आग्रह करता हूँ कि वे इस घटना को धैर्य, सावधानी और यथार्थ रूप में देखें, तिब्बती सांस्कृतिक संदर्भ को समझें, घटना के समग्र संदर्भ का अध्ययन करें और यह भी देखें कि इस घटना को देखने में आपका व्यक्तिगत अवधारणा किस हद तक प्रक्षेपित हुई है ?

परम पावन दलाई लामा जी उच्चतम कोटि के सिद्ध योगी एवं महामानव हैं। उनकी निंदा करने से उन पर व्यक्तिगत रूप से कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, लेकिन इस घटना से बड़े पैमाने पर दुनिया में उनके अनुयायियों, विशेषकर, तिब्बती और हिमालयी बौद्ध समुदाय के लोगों के विश्वास पर और तथागत के शासन पर गहरा आघात पहुँचेगा।

जब से परम पावन जी बुद्ध की इस भूमि पर आये हैं, तब से वे अपना सम्पूर्ण जीवन मानवीय मूल्यों, शांति और धार्मिक सद्भाव को निःस्वार्थ रूप से बढ़ावा देकर सभी संवेदनशील प्राणियों और दुनिया के हित के लिए अथक, निरंतर और करुणा से द्रवित होकर काम कर रहे हैं। उन्होंने चार प्रतिबद्धताएं की हैं जो विश्व-शांति और न्याय की स्थापना के लिए दूरगामी निहितार्थ रखते हैं, यथा- (1) धर्मनिरपेक्ष नैतिकता को बढ़ावा देना, (2) अंतर-धार्मिक सद्भाव स्थापित करना (3) तिब्बती भाषा, संस्कृति और बौद्ध विरासत का संरक्षण करना, (4) प्राचीन भारतीय ज्ञान के प्रति जागरूकता पैदा करना तथा पुनर्जीवित करना।

परम पावन दलाई लामा जी पर अनर्गल आक्षेप से उनके विशुद्ध व्यक्तित्व पर दोष नहीं लग सकता, लेकिन उपर्युक्त उनकी प्रतिबद्धताओं एवं उच्च मानवीय मूल्यों पर हमला होगा, जो दुनिया में विश्वशान्ति के लिए अत्यन्त हानिकारक सिद्ध होगा।

तिब्बती एवं भारतीय बौद्ध विचारों के अध्ययन-केन्द्र के रूप में स्थापित केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ में तिब्बती, हिमालयी और भारतीय छात्रों को समान रूप से अवसर प्रदान किया जाता है, जो वर्षों पूर्व परम पावन जी की दूरदृष्टि के फलस्वरूप अस्तित्व में आया था। उनकी उपस्थिति, प्रेरणा और मार्गदर्शन ने तिब्बती और हिमालयी समुदायों में बौद्ध परंपरा के अध्ययन में क्रांति ला दी है।

परम पावन दलाई लामा जी के समर्थन में तिब्बती और हिमालयी समुदायों के द्वारा भारत के विभिन्न हिस्सों में तथा दुनिया भर में सार्वजनिक विरोध प्रदर्शन किया जा रहा है। अतः उनकी आहत भावनाओं को वैश्विक समुदाय अनुभव करें और उनके सांस्कृतिक दृष्टिकोण और आवाज़ को सुनें।

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ के कुलपति (प्रभारी) के रूप में मेरी ओर से, मेरे सहकर्मियों तथा छात्रों की ओर से, मीडिया और वैश्विक समुदाय से इस मुद्दे को उचित परिप्रेक्ष्य में रखने की अपील करते हैं।

अन्त में, मैं परम पावन 14वें दलाई लामा जी के उत्तम स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की मंगलकामना करता हूँ और उनसे विनम्र निवेदन करता हूँ कि विश्व में शान्ति और नैतिक मूल्यों की रक्षा के लिए दुनियां को उनका मार्गदर्शन मिलता रहे।

वङ्छुग दोर्जे नेगी

CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
(Declared as "Deemed to be University" under Section 3 of the UGC Act, 1956)
SARNATH, VARANASI – 221 007 (U.P.) INDIA